चम्पारण ज्ञानाग्रह

प्रार्थना-सभा सामग्री, दिनांक– 25 अगस्त 2026, अंक –343.

प्रस्तुतिः- GOVT. PS बोदसर, बगहा-2, प. चम्पारण (10010803702)

सौजन्य :- "TEACHERS OF BIHAR - THE CHANGE MAKERS."

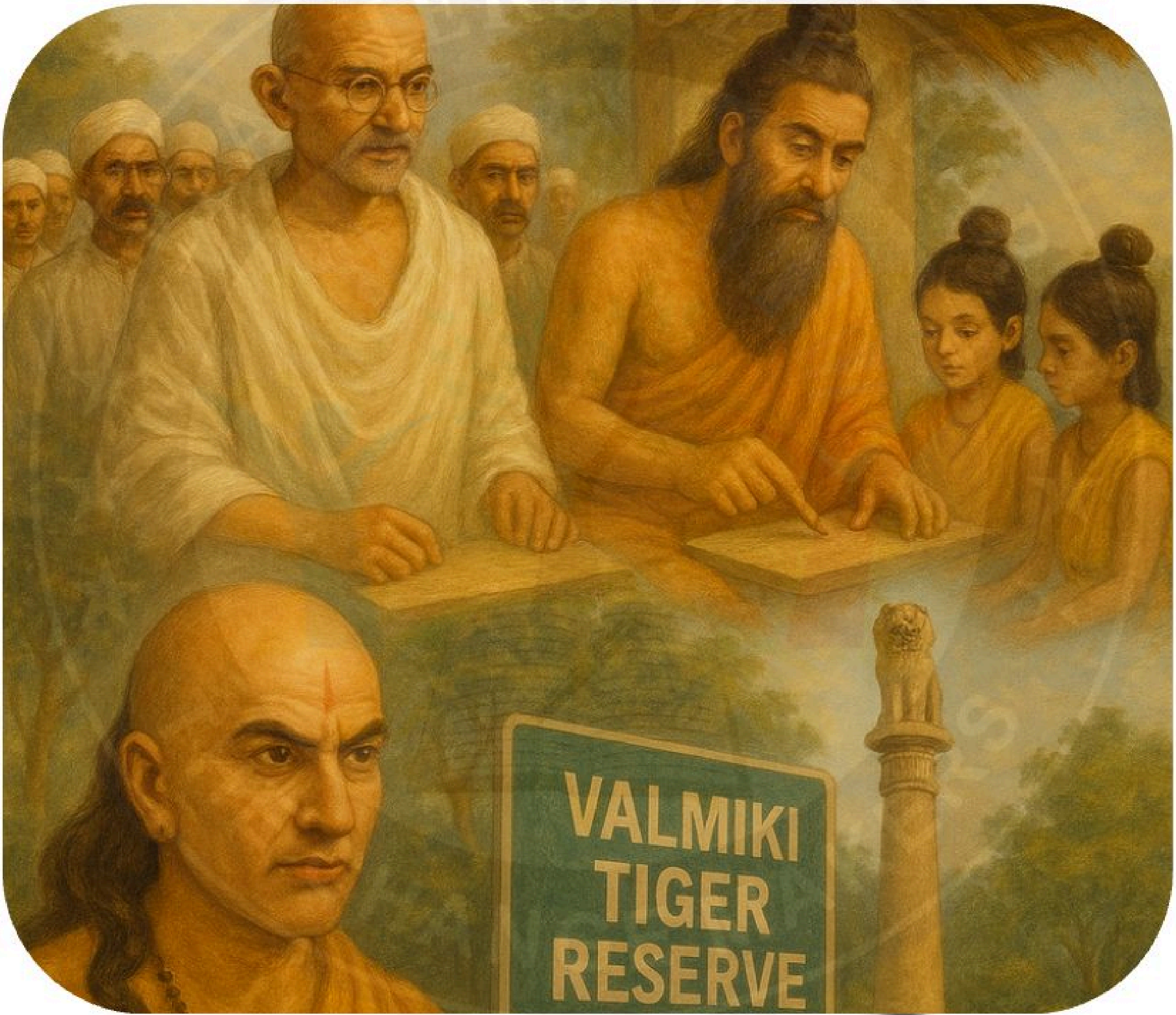

"सीखना कभी दिमाग को थकाता नहीं है।"
— लियोनार्डो द विंची

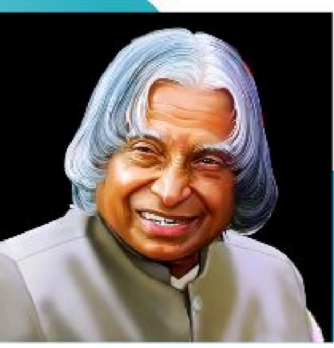

विद्यार्थियों की बौद्धिक और नैतिक उन्नति की ओर....

संपादकः- शैलेन्द्र कुमार

www.teachersofbihar.org

अनुभाग-1

"प्रार्थना-सभा सामग्री"

Monday Prayer

सुबह सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु,
करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु।

सदा हमारे सिर पर तेरा हाथ रहे,
हर सुख-दुख संकट में तेरा साथ रहे,
हां, हर सुख-दुख संकट में तेरा साथ रहे;
खुशियों का हो जीवन में आयाम प्रभु,
करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु।
सुबह सवेरे लेकर तेरा.....

मिलकर इस धरती को चमन बनाएं हम,
गांधी, गौतम, रामकृष्ण बन जाएं हम।
हां, गांधी, गौतम, रामकृष्ण बन जाएं हम;
यही हमारा हो हरदम पैगाम प्रभु,
करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु।
सुबह सवेरे लेकर तेरा.....

मात-पिता की सेवा और सम्मान करें,
उनकी खुशियों पर सब कुछ कुर्बान करें।
हां, उनकी खुशियों पर सब कुछ कुर्बान करें।
अच्छे कर्म का अच्छा परिणाम प्रभु,
करते हैं हम शुरु आज का काम प्रभु।
सुबह सवेरे लेकर तेरा.....

शुद्ध भाव से तेरा ध्यान लगाएं हम,
विद्या का वरदान तुम्हीं से पाए हम।
हाँ, विद्या का वरदान तुम्हीं से पाए हम।
तुम्ही से है आगाज़ तुम्हीं से अंजाम प्रभु,
करते है हम शुरु आज का काम प्रभु।
सुबह सवेरे लेकर तेरा.....

गुरुओं का सत्कार कभी न भूले हम,
इतना बनें महान गगन को छु ले हम।
हाँ, इतना बनें महान गगन को छु ले हम।
तुम्हीं से है हर सुबह तुम्ही से शाम प्रभु,
करते है हम शुरु आज का काम प्रभु।
सुबह सवेरे लेकर तेरा.....

बिहार राज्य गीत

मेरे भारत के कंठहार ,
तुझको शत-शत वंदन बिहार..!

तू वाल्मीकि की रामायण
तू वैशाली का लोकतंत्र,
तू बोधिसत्व की करूणा है
तू महावीर का शांतिमंत्र
तू नालंदा का ज्ञानदीप
तू हीं अक्षत चंदन बिहार

तू है अशोक की धर्मध्वजा
तू गुरूगोविंद की वाणी है
तू आर्यभट्ट तू शेरशाह
तू कुंवर सिंह बलिदानी है
तू बापू की है कर्मभूमि
धरती का नंदन वन बिहार।

तेरी गौरव गाथा अपूर्व
तू विश्व शांति का अग्रदूत
लौटेगा खोया स्वाभिमान
अब जाग चुके तेरे सपूत
अब तू माथे का विजय तिलक
तू आँखों का अंजन बिहार
तुझको शत-शत वंदन बिहार
मेरे भारत के कंठहार ॥

राष्ट्रीय गीत (190 सेकंड)

वन्दे मातरम्।
सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्,
शस्यश्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदां वरदां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
कोटि-कोटि कण्ठ कलकल निनाद कराले,
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले,
अबला केनो मा एतो बले?
बहुबलधारिणीं नमामि तारिणीं,
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि विद्या, त्वं हि धर्म,
त्वं हि हृदि, त्वं हि मर्म,
त्वं हि प्राणाः शरीरे।
बाहुते त्वं मा शक्ति,
हृदये त्वं मा भक्ति,
तोमारइ प्रतिमा गढ़ि
मन्दिरे-मन्दिरे।
वन्दे मातरम्॥
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी,
कमला कमलदलविहारिणी,
वाणी विद्यादायिनी नमामि त्वाम्।
नमामि कमलाम् अमलाम् अतुलाम्,
सुजलां सुफलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्,
धरणीं भरणीं मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा
द्रविड़-उत्कल-बंग।
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा
उच्छल-जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
Govt. PS बोदसर,
बगहा-2, प. चंपारण।

संविधान की प्रस्तावना

हम, भारत के लोग,
भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को: सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति मार्ग शीर्ष शुक्ल सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

मौलिक अधिकार

1. "समता का अधिकार (Right to Equality.)" - अनुच्छेद 14–18
2. "स्वतंत्रता का अधिकार - (Right to Freedom.)" - अनुच्छेद 19–22
3. "शोषण के विरुद्ध अधिकार (Right against Exploitation.)" - अनुच्छेद 23–24
4. "धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (Right to Freedom of Religion.)" - अनुच्छेद 25–28
5. "संस्कृति एवं शिक्षा संबंधी अधिकार (Cultural and Educational Right.)" - अनुच्छेद 29–30
6. "संवैधानिक उपचारों का अधिकार (Right to Constitutional Remedies.)" - अनुच्छेद 32

मौलिक कर्तव्य

अनुच्छेद 51(क) – मौलिक कर्तव्य:
भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –
(1.) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;
(2.) स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;
(3.) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;
(4.) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;
(5.) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;
(6.) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;
(7.) प्राकृतिक पर्यावरण, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, की रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;
(8.) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;
(9.) सार्वजनिक सम्पत्ति की रक्षा करे और हिंसा से दूर रहे;
(10.) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्नों द्वारा उन्नति की नई ऊँचाइयों को छू ले;
(11.) यदि वह माता-पिता या संरक्षक है, तो छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बच्चे या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

वर्ग:- प्राथमिक (1 - 5) के लिए

सामान्य-ज्ञान

प्रश्न 1. मिस्र की राजधानी क्या है?
उत्तर: काहिरा
प्रश्न 2. भारत में व्यक्तिगत रूप से पहला नोबेल पुरस्कार पाने वाले वैज्ञानिक कौन थे?
उत्तर: सी. वी. रमन
प्रश्न 3. 'बिहू' के अतिरिक्त असम का प्रसिद्ध लोकनृत्य 'बगरुम्बा' किस जनजाति से संबंधित है?
उत्तर: बोडो
प्रश्न 4. 15 का घन (Cube) कितना होगा?
उत्तर: 3375
प्रश्न 5. बिहार का 'सोन भंडार गुफा' किस स्थान पर स्थित है?
उत्तर: राजगीर
प्रश्न 6. नागी पक्षी अभयारण्य बिहार के किस जिले में स्थित है?
उत्तर: जमुई
प्रश्न 7. ग्लोब का आविष्कार किसने किया था?
उत्तर: मार्टिन बेहाइम
प्रश्न 8. भारत में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की सेवानिवृत्ति की आयु कितनी है?
उत्तर: 65 वर्ष
प्रश्न 9. 'अत्यधिक वर्षा' के लिए एक शब्द क्या है?
उत्तर: अतिवृष्टि
प्रश्न 10. पौधों में फूल का कौन-सा भाग परागकणों को ग्रहण करता है?
उत्तर: वर्तिकाग्र

संकलन:-
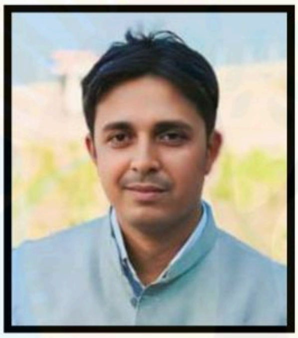
पिन्टू कुमार
विद्यालय अध्यापक
UHS रामपुर, बगहा-2

शब्द - संगम

Fountain – (फाउंटेन) – फव्वारा
Lawn – (लॉन) – घास का मैदान
Flowerbed – (फ्लावरबेड) – फूलों की क्यारी
Shrub – (श्रब) – झाड़ी
Sapling – (सैपलिंग) – पौध / नवांकुर
Trunk – (ट्रंक) – पेड़ का तना
Branchlet – (ब्रांचलेट) – छोटी शाखा

संकलन:-
सौरभ कुमार
विद्यालय अध्यापक
Govt. UMS गोइती
बगहा-2, प. चम्पारण

English गप-शप

थीम: Simple Future Tense – “कितने बजे ... करोगे/करोगी?” (What time will you ...?)

तुम कितने बजे उठोगे/उठोगी? – What time will you wake up?
तुम कितने बजे स्कूल जाओगे/जाओगी? – What time will you go to school?
तुम कितने बजे खाना खाओगे/खाओगी? – What time will you eat?
तुम कितने बजे पढ़ाई करोगे/करोगी? – What time will you study?
तुम कितने बजे सोओगे/सोओगी? – What time will you go to bed?

संकलन:-
अभिनव राज
प्रधान शिक्षक
रा० प्रा० वि० शेखधुरवा
चनपटिया, प. चम्पारण।

"सामान्य-ज्ञान"(वर्ग:6-12)

प्र.1. 25 अगस्त से 8 सितंबर तक भारत में नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कौन-सा पखवाड़ा मनाया जाता है? (दिवस ज्ञान)

उत्तर: राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा

व्याख्या: भारत में प्रत्येक वर्ष 25 अगस्त से 8 सितंबर तक राष्ट्रीय नेत्रदान पखवाड़ा मनाया जाता है। इसका उद्देश्य नेत्रदान के प्रति जन-जागरूकता बढ़ाना, मृत्यु के बाद कॉर्निया दान की उपयोगिता समझाना और दृष्टिबाधित व्यक्तियों को कॉर्नियल प्रत्यारोपण के माध्यम से दृष्टि उपलब्ध कराने के लिए समाज को प्रेरित करना है। यह पखवाड़ा राष्ट्रीय अंधत्व एवं दृष्टिबाधिता नियंत्रण कार्यक्रम के अंतर्गत नेत्रदान और नेत्र-बैंकिंग के महत्व को जनसामान्य तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण अवसर है। �

संदर्भ: National Programme for Control of Blindness; National Eye Donation Fortnight, 25 अगस्त–8 सितंबर;

प्र.2. अगस्त 2026 में भारत के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा संचालित 'डीप ओशन मिशन' के तहत समुद्र की 6,000 मीटर गहराई में 3 वैज्ञानिकों को ले जाने वाले किस स्वदेशी सबमर्सिबल का सफल परीक्षण किया गया? (समसामयिक घटना)

उत्तर: मत्स्य 6000 (Matsya 6000)

व्याख्या: अगस्त 2026 में राष्ट्रीय महासागर प्रौद्योगिकी संस्थान (NIOT), चेन्नई द्वारा विकसित भारत के पहले स्वदेशी मानवयुक्त गहरे महासागरीय सबमर्सिबल 'मत्स्य 6000' (Matsya 6000) का उन्नत चरण परीक्षण सफलतापूर्वक संचालित किया गया। यह पनडुब्बी तीन वैज्ञानिकों को समुद्र की 6,000 मीटर (6 किमी) गहराई में ले जाकर 12 से 72 घंटे तक शोध कार्य करने में सक्षम है। इसका प्राथमिक उद्देश्य गहरे समुद्र में स्थित पॉलीमेटैलिक नोड्यूल्स (निकल, कोबाल्ट, तांबा), गैस हाइड्रेट्स तथा अद्वितीय समुद्री जैव-विविधता का अध्ययन व सतत दोहन करना है। इसके साथ भारत गहरे समुद्र में मानव भेजने वाले चुनिंदा देशों के समूह में शामिल हो गया है।

संदर्भ: Ministry of Earth Sciences (MoES) Deep Ocean Mission Compendium August 2026;

प्र.3. हिंदी साहित्य का प्रथम मानक आंचलिक उपन्यास माने जाने वाले 'मैला आँचल' (1954) के रचनाकार कौन हैं, जिसमें बिहार के सीमांचल (पूर्णिया) के मेरीगंज गाँव की सामाजिक पृष्ठभूमि का यथार्थ चित्रण है? (पुस्तक एवं लेखक)

उत्तर: फणीश्वर नाथ 'रेणु'

व्याख्या: 'मैला आँचल' (1954) हिंदी कथा साहित्य का युगांतरकारी प्रथम आंचलिक उपन्यास है, जिसकी रचना प्रसिद्ध साहित्यकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' ने की थी। यह उपन्यास बिहार के तत्कालीन पूर्णिया जिले के पिछड़े 'मेरीगंज' गाँव की सामाजिक संरचना, जातिगत विद्वेष, अंधविश्वास, गरीबी, शोषण तथा स्वाधीनता के बाद के राजनीतिक संक्रमण का अत्यंत सजीव और प्रामाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। इसमें डॉ. प्रशांत और कमली के मानवीय संबंधों के माध्यम से मलेरिया-कालाजार जैसी महामारियों से जूझते ग्रामीण भारत के दर्द को स्थानीय लोकगीतों, मुहावरों और मैथिली-भोजपुरी मिश्रित भाषा में अमर अभिव्यक्ति दी गई है।

संदर्भ: फणीश्वर नाथ रेणु – 'मैला आँचल', राजकमल प्रकाशन; NCERT Hindi Class 11 (अंतरा भाग-1, पाठ्य संदर्भ); BPSC/UPSC Hindi Literature Optional Syllabus

प्र.4. समताप मंडल (Stratosphere) में स्थित सुरक्षात्मक ओजोन परत के विनाश के लिए कौन-सा मुख्य रसायन उत्तरदायी है और इसे नियंत्रित करने हेतु 1987 में कौन-सा ऐतिहासिक समझौता हस्ताक्षरित हुआ? (पर्यावरण/ग्लोबल वॉर्मिंग)

उत्तर: क्लोरोफ्लोरोकार्बन (CFC); मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल (1987)

व्याख्या: वायुमंडल के समताप मंडल (Stratosphere) में 15 से 35 किमी की ऊंचाई पर स्थित ओजोन (O_3) परत सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों (UV-B) को अवशोषित कर पृथ्वी के जीवों की रक्षा करती है। रेफ्रिजरेटर, एयर कंडीशनर और फोम उद्योगों से उत्सर्जित 'क्लोरोफ्लोरोकार्बन' (CFCs) समताप मंडल में पराबैंगनी प्रकाश से टूटकर मुक्त क्लोरीन परमाणु बनाते हैं, जिसका एक अकेला परमाणु लगभग 1 लाख ओजोन अणुओं को नष्ट कर देता है। इस वैश्विक संकट से निपटने के लिए 16 सितंबर 1987 को 'मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल' अपनाया गया, जो ओजोन-क्षयकारी पदार्थों के उत्पादन पर रोक लगाने वाला सबसे सफल वैश्विक पर्यावरण समझौता है।

संदर्भ: NCERT Science Class 10, Ch 15 "हमारा पर्यावरण", p. 262–264; NCERT Physical Geography Class 11, Ch 8 "वायुमंडल का संघटन तथा संरचना", p. 76–78;

प्र.5. मौर्य सम्राट अशोक ने किस भीषण युद्ध के व्यापक नरसंहार और मानवीय पीड़ा से व्यथित होकर सैन्य विजय (भेरीघोष) को त्यागकर 'धम्मघोष' की नीति अपनाई थी? (इतिहास)

उत्तर: कलिंग युद्ध (261 ईसा पूर्व)

व्याख्या: मौर्य वंश के महान शासक सम्राट अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष (261 ईसा पूर्व) में पूर्वी तट पर स्थित कलिंग (वर्तमान ओडिशा) पर आक्रमण किया था। इस भीषण युद्ध में लगभग 1 लाख लोग मारे गए, 1.5 लाख बंदी बनाए गए और अनगिनत निर्दोष नागरिक बेघर हो गए। इस व्यापक विनाश और मानवीय त्रासदी ने अशोक के हृदय को गहराई से झकझोर दिया। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने हिंसा और युद्ध नीति का सदा के लिए त्याग कर दिया तथा बौद्ध धर्म के प्रभाव में आकर करुणा, सहिष्णुता, लोक-कल्याण और अहिंसा पर आधारित 'धम्म' की स्थापना की। इस ऐतिहासिक बदलाव का विवरण उनके 13वें वृहद शिलालेख में मिलता है।

संदर्भ: NCERT History Class 6 (हमारे अतीत-1), Ch 7 "अशोक: एक अनोखा सम्राट जिसने युद्ध का त्याग किया", p. 67–74; NCERT History Class 12 (Themes in Indian History Part-1), Ch 2, p. 3

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.6. भारत की 'मानक समय रेखा' (Standard Meridian of India) का देशांतरीय मान कितना है और यह ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से कितने घंटे आगे है? (भूगोल)
उत्तर: 82°30' पूर्वी देशांतर; 5 घंटे 30 मिनट (+05:30)
व्याख्या: भारत का देशांतरीय विस्तार लगभग 68°7' पूर्व से 97°25' पूर्व तक (करीब 30 डिग्री) फैला है, जिसके कारण देश के सबसे पूर्वी छोर (अरुणाचल प्रदेश) और सबसे पश्चिमी छोर (गुजरात) के स्थानीय समय में लगभग 2 घंटे का अंतर होता है। देश में प्रशासनिक और व्यावहारिक कार्यों में समय की एकरूपता बनाए रखने के लिए उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर (प्रयागराज के निकट) से गुजरने वाली 82^\circ 30' पूर्वी देशांतर रेखा को 'भारतीय मानक देशांतर' माना गया है। पृथ्वी 1° देशांतर घूमने में 4 मिनट का समय लेती है (82.5 \times 4 = 330 मिनट), इसलिए भारतीय मानक समय (IST) लंदन के ग्रीनविच समय से ठीक 5 घंटे 30 मिनट आगे रहता है।
संदर्भ: NCERT Geography Class 9 (समकालीन भारत-1), Ch 1 "भारत - आकार और स्थिति", p. 2–5; NCERT Geography Class 6, Ch 2 "ग्लोब: अक्षांश एवं देशांतर", p. 14–16

प्र.7. भारतीय संविधान के किस ऐतिहासिक संशोधन को 'लघु संविधान' (Mini Constitution) कहा जाता है, जिसके तहत उद्देशिका में "समाजवादी, पंथनिरपेक्ष और अखंडता" शब्द जोड़े गए थे? (राजनीति एवं संविधान)
उत्तर: 42वां संविधान संशोधन अधिनियम (1976)
व्याख्या: वर्ष 1976 में पारित 42वें संविधान संशोधन अधिनियम को भारतीय संविधान का सबसे व्यापक और युगांतरकारी संशोधन माना जाता है, जिसके कारण इसे 'लघु संविधान' (Mini Constitution) की संज्ञा दी गई है। इसके प्रमुख प्रावधानों में शामिल हैं: (1) प्रस्तावना (Preamble) में पहली व एकमात्र बार संशोधन कर तीन नए शब्द — "समाजवादी", "पंथनिरपेक्ष" और "अखंडता" जोड़े गए; (2) सरदार स्वर्ण सिंह समिति की अनुशंसा पर संविधान में भाग IV-A और अनुच्छेद 51A जोड़कर नागरिकों के लिए 10 'मौलिक कर्तव्य' शामिल किए गए; (3) शिक्षा, वन, नाप-तौल तथा वन्यजीव संरक्षण को राज्य सूची से समवर्ती सूची में स्थानांतरित किया गया।
संदर्भ: NCERT Political Science Class 11 (भारत का संविधान: सिद्धांत और व्यवहार), Ch 9 "संविधान: एक जीवंत दस्तावेज़", p. 198–204; Constitution of India (42nd Constitutional Amendment Act,

प्र.8. दूरसंचार और इंटरनेट में प्रयुक्त होने वाले ऑप्टिकल फाइबर (Optical Fibre) में प्रकाश किरणों का संचरण भौतिकी के किस परिघटना के सिद्धांत पर आधारित होता है? (विज्ञान)
उत्तर: पूर्ण आंतरिक परावर्तन (Total Internal Reflection - TIR)
व्याख्या: ऑप्टिकल फाइबर संचार तंत्र प्रकाश के 'पूर्ण आंतरिक परावर्तन' (Total Internal Reflection) के सिद्धांत पर कार्य करता है। जब प्रकाश की किरण सघन माध्यम (उच्च अपवर्तनांक वाला ग्लास/सिलिका कोर) से विरल माध्यम (निम्न अपवर्तनांक वाली क्लैडिंग) की ओर गमन करती है और उसका आपतन कोण (Angle of Incidence) दोनों माध्यमों के सीमांत 'क्रांतिक कोण' (Critical Angle) से अधिक हो जाता है, तो प्रकाश किरण दूसरे माध्यम में अपवर्तित होने के बजाय उसी सघन माध्यम में पूर्णतः परावर्तित हो जाती है। इस सतत परावर्तन के कारण प्रकाश संकेत बिना ऊर्जा क्षय के अत्यंत तीव्र गति (प्रकाश की चाल) से हजारों किलोमीटर लंबी दूरी तक डेटा संचारित करते हैं।
संदर्भ: NCERT Science Class 10, Ch 10 "प्रकाश - परावर्तन तथा अपवर्तन", p. 175–184; NCERT Physics Class 12, Ch 9

प्र.9. महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) जिले में वाघोरा नदी घाटी में सह्याद्रि पहाड़ियों को काटकर बनाई गई कौन-सी गुफाएं बौद्ध जातक कथाओं के भित्ति चित्रों हेतु विश्वप्रसिद्ध हैं? (कला एवं संस्कृति)
उत्तर: अजंता की गुफाएं (Ajanta Caves)
व्याख्या: अजंता की गुफाएं महाराष्ट्र के छत्रपति संभाजीनगर जिले में सह्याद्रि पर्वतमाला के एक अर्धचंद्राकार शैलखंड को काटकर तराशी गई कुल 30 बौद्ध गुफाओं (चैत्य और विहार) का भव्य समूह हैं। इनका निर्माण ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर छठी शताब्दी ईस्वी के मध्य सातवाहन एवं वाकाटक राजवंशों के काल में हुआ था। अजंता की दीवारों और छतों पर निर्मित 'भित्ति चित्र' (Fresco Paintings) भगवान बुद्ध के पूर्व जन्मों से जुड़ी 'जातक कथाओं' और उनके जीवन प्रसंगों को अत्यंत सूक्ष्मता और भावपूर्ण रंगों से दर्शाते हैं। 'बोधिसत्व पद्मपाणि' और 'वज्रपाणि' के चित्र भारतीय शास्त्रीय चित्रकला के अनुपम उदाहरण हैं। 1983 में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था।
संदर्भ: NCERT Class 11 Fine Arts (भारतीय कला का परिचय-1), Ch 4 "बौद्ध, जैन और हिंदू कला स्मारक",

प्र.10. 8वीं शताब्दी में पाल वंश के किस प्रसिद्ध शासक ने बिहार के भागलपुर जिले (अंतीचक) में 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' की स्थापना की थी, जो वज्रयान बौद्ध शिक्षा का अंतरराष्ट्रीय केंद्र बना? (बिहार सामान्य ज्ञान)
उत्तर: राजा धर्मपाल (पाल वंश)
व्याख्या: प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के विख्यात केंद्र 'विक्रमशिला विश्वविद्यालय' की स्थापना 8वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पाल राजवंश के प्रतापी सम्राट धर्मपाल ने की थी। यह स्थल वर्तमान बिहार राज्य के भागलपुर जिले के कहलगांव (अंतीचक गाँव) में स्थित है। यह विश्वविद्यालय तंत्रयान/वज्रयान बौद्ध दर्शन, तर्कशास्त्र, न्याय, व्याकरण और खगोलशास्त्र के अध्ययन का अंतरराष्ट्रीय केंद्र था, जहाँ तिब्बत, चीन और मध्य एशिया से विद्यार्थी आते थे। यहाँ के प्रधान आचार्य दीपंकर श्रीज्ञान (अतीश) ने 11वीं शताब्दी में तिब्बत की यात्रा कर वहां बौद्ध धर्म का पुनरुद्धार किया था। 1203 ईस्वी में बख्तियार खिलजी के सैन्य अभियान के दौरान इसे नष्ट कर दिया गया था।
संदर्भ: NCERT History Class 7 (हमारे अतीत-2), Ch 2 "नए राजा और उनके राज्य", p. 16–19; Bihar SCERT History Class 7; BPSC General Studies Bihar Special Compendium.

"सामान्य-ज्ञान"

प्र.11. 'मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम' (सुरक्षित शनिवार: अगस्त W4 – नाव दुर्घटना एवं पानी में डूबने से बचाव) के अनुसार यदि कोई व्यक्ति नदी या तालाब में डूब रहा हो, तो बचावकर्ता को 'पहुंचो-फेंको-रोको' (Reach-Throw-Don't Go) सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत क्या कदम उठाना चाहिए? (विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम)

उत्तर: रस्सी/बांस/गैलन फेंकें, स्वयं पानी में न कूदें (Reach, Throw, Row, Don't Go)

व्याख्या: बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (BSDMA) के 'सुरक्षित शनिवार' कैलेंडर (अगस्त W4) और सेंडाई आपदा जोखिम न्यूनीकरण फ्रेमवर्क के अनुसार, नाव दुर्घटना और डूबने की घटनाओं में जीवन रक्षा का स्वर्णिम नियम "पहुंचो, फेंको, रोको – स्वयं बिना तैयारी पानी में मत कूदो" है: (1) डूबते व्यक्ति को देखकर बिना तैराकी प्रशिक्षण और लाइफ जैकेट के कभी भी सीधे पानी में नहीं कूदना चाहिए, क्योंकि घबराहट में डूबता व्यक्ति बचाने वाले को भी नीचे डुबो सकता है; (2) किनारे पर सुरक्षित लेटकर लंबी लकड़ी, बांस, गमछा या साड़ी उसकी ओर बढ़ाएँ (Reach); (3) हवा भरा ट्यूब, रस्सी से बंधा प्लास्टिक का खाली बंद जार/गैलन या फ्लोट उसकी ओर फेंकें (Throw); (4) व्यक्ति को सुरक्षित बाहर निकालने पर यदि सांस रुकी हो, तो तुरंत पेट/छाती दबाकर कृत्रिम श्वसन (CPR) दें और तत्काल आपातकालीन नंबर 112/108 पर संपर्क करें।

संदर्भ: बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (BSDMA) सुरक्षित शनिवार प्रशिक्षण मॉड्यूल (अगस्त W4); Sendai Framework for Disaster Risk Reduction (2015–2030); NDRF Water Safety and Rescue Protocol.

प्र.12. एक दीवार घड़ी में जब दोपहर के ठीक 3:30 बजते हैं, तो घड़ी की घंटे वाली सुई और मिनट वाली सुई के मध्य कितने अंश (डिग्री) का आंतरिक कोण बनेगा? (रोचक पहेली/गणित/रीज़निंग)

उत्तर: 75 डिग्री (75°)

व्याख्या: घड़ी में दोनों सुइयों के बीच का कोण ज्ञात करने का प्रामाणिक गणितीय सूत्र है: $\text{Angle}\ (\theta) = \left\vert 30H - \frac{11}{2}M \right\vert$, जहाँ $H = \text{घंटा}$ और $M = \text{मिनट}$ होता है। यहाँ $H = 3$ तथा $M = 30$ है। मान प्रतिस्थापित करने पर: $\theta = \left\vert 30(3) - \frac{11}{2}(30) \right\vert = \left\vert 90 - 11 \times 15 \right\vert = \left\vert 90 - 165 \right\vert = \vert -75 \vert = 75^\circ$। तार्किक दृष्टिकोण से: मिनट की सुई 30 मिनट पर ठीक 6 के अंक पर (180°) होती है, जबकि 30 मिनट बीतने पर घंटे की सुई 3 और 4 के ठीक मध्य में ($3.5 \times 30^\circ = 105^\circ$) पहुंच जाती है। अतः दोनों सुइयों के बीच का वास्तविक कोण $180^\circ - 105^\circ = 75^\circ$ होगा।

GS संकलन:-

शैलेन्द्र कुमार

प्रधान शिक्षक

Govt. PS बोदसर

बगहा-2, प. चम्पारण।

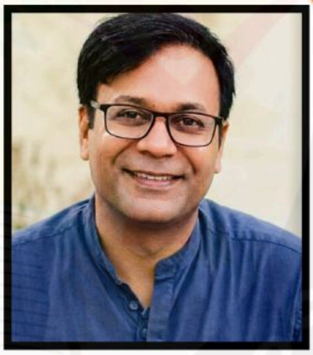

अनुभाग-4

-: शब्द - संगम :-

Foment (फोमेन्ट) = Instigate (इन्स्टिगेट) = भड़काना / उकसाना

Antonym – Suppress (सप्रेस) = दबाना / शांत करना

Germane (जर्मेन) = Relevant (रेलेवन्ट) = प्रासंगिक / संबंधित

Antonym – Irrelevant (इरेलेवन्ट) = अप्रासंगिक

Incontrovertible (इनकॉन्ट्रोवर्टिबल) = Undeniable (अन्डिनायबल) = निर्विवाद / अकाट्य

Antonym – Debatable (डिबेटेबल) = विवादास्पद / बहस योग्य

Lamentable (लैमेंटेबल) = Regrettable (रिग्रेटेबल) = खेदजनक / दु:खद

Antonym – Commendable (कमेन्डेबल) = प्रशंसनीय

Oblivious (ऑब्लिवियस) = Unaware (अनअवेयर) = अनभिज्ञ / बेखबर

Antonym – Conscious (कॉन्शस) = सचेत / जागरूक

~: संकलन :~

राकेश कुमार राव

प्रधानाध्यापक

PMश्री +2 NGY उच्च विद्यालय

वाल्मीकिनगर, बगहा-2 , प. चम्पारण।

"आज का अख़बार"

NATIONAL NEWS

English Headline: Ministry of Electronics and IT Unveils 'National Quantum-Secure Encryption Standard' for Strategic Cyber Defense.
हिन्दी अनुवाद: इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय ने रणनीतिक साइबर रक्षा के लिए 'राष्ट्रीय क्वांटम-सुरक्षित एन्क्रिप्शन मानक' का अनावरण किया।
राष्ट्रीय क्वांटम मिशन के तहत केंद्र सरकार ने देश के वित्तीय नेटवर्क, रक्षा संचार और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे को भविष्य के क्वांटम कंप्यूटिंग खतरों से सुरक्षित करने के लिए नए पोस्ट-क्वांटम क्रिप्टोग्राफी मानक अधिसूचित किए हैं। इसके तहत सभी प्रमुख सार्वजनिक बैंकों और डेटा केंद्रों में स्वदेशी क्वांटम की-डिस्ट्रीब्यूशन (QKD) प्रोटोकॉल अनिवार्य किए जाएंगे।

English Headline: NITI Aayog Releases 'National Circular Bio-Economy Index 2026', Highlighting Industrial Bio-Manufacturing Standards.
हिन्दी अनुवाद: नीति आयोग ने औद्योगिक जैव-विनिर्माण मानकों को रेखांकित करते हुए 'राष्ट्रीय चक्रीय जैव-अर्थव्यवस्था सूचकांक 2026' जारी किया।
नीति आयोग द्वारा जारी नवीनतम मूल्यांकन में कृषि-अवशेषों से बायो-प्लास्टिक, कंप्रेस्ड बायोगैस (CBG) और 2G इथेनॉल उत्पादन में पंजाब, हरियाणा और महाराष्ट्र ने शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। यह रिपोर्ट देश भर में पराली जलाने की घटनाओं को नियंत्रित करने और हरित औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के प्रयासों का आकलन करती है।

English Headline: ISRO Completes Integrated High-Altitude Hot Test of Indigenous Cryogenic Upper Stage for Next-Gen Launchers.
हिन्दी अनुवाद: इसरो ने अगली पीढ़ी के प्रक्षेपकों के लिए स्वदेशी क्रायोजेनिक अपर स्टेज का एकीकृत उच्च-ऊंचाई हॉट परीक्षण सफलतापूर्वक पूरा किया।
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने तमिलनाडु के महेंद्रगिरि स्थित इसरो प्रोपल्शन कॉम्प्लेक्स (IPRC) में उच्च-थ्रस्ट क्रायोजेनिक इंजन का सफल वैक्यूम इग्निशन परीक्षण किया। यह तकनीक आगामी भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन (BAS) के मॉड्यूल और गहरे अंतरिक्ष विज्ञान अभियानों के लिए पेलोड क्षमता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाएगी।

INTERNATIONAL NEWS

English Headline: UN General Assembly Adopts Milestone Resolution Establishing Comprehensive Framework for Space Debris Mitigation and Satellite Disposal.
हिन्दी अनुवाद: संयुक्त राष्ट्र महासभा ने अंतरिक्ष मलबे को कम करने और उपग्रह निपटान के लिए व्यापक ढांचा स्थापित करने वाला ऐतिहासिक प्रस्ताव अपनाया।
न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित विशेष सत्र के दौरान सदस्य राष्ट्रों ने पृथ्वी की निम्न कक्षा (LEO) की दीर्घकालिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक बहुपक्षीय समझौते को मंजूरी दी। इसके तहत सभी देशों और निजी उपग्रह ऑपरेटरों के लिए सेवा समाप्ति के बाद उपग्रहों का सुरक्षित डी-ऑर्बिटिंग (De-orbiting) अनिवार्य बनाया गया है।

English Headline: World Bank and Asian Development Bank Commit Joint $3.6 Billion Climate Adaptation Facility for South Asian River Deltas.
हिन्दी अनुवाद: विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक ने दक्षिण एशियाई नदी डेल्टा क्षेत्रों के लिए संयुक्त $3.6 बिलियन की जलवायु अनुकूलन सुविधा की घोषणा की।
गंगा, ब्रह्मपुत्र और सिंधु बेसिन के तटीय तथा नदी क्षेत्रों में चरम मौसम की घटनाओं, बाढ़ सुरक्षा तटबंधों और प्रारंभिक चेतावनी प्रणालियों के आधुनिकीकरण के लिए यह बहुपक्षीय वित्तीय पैकेज स्वीकृत किया गया है। यह फंड भारत, नेपाल और बांग्लादेश में सतत जल संसाधन प्रबंधन को गति प्रदान करेगा।

English Headline: World Health Organization (WHO) Launches 'Global Vector-Borne Disease Genomic Early Warning Grid 4.0' to Tackle Climate Health Risks.
हिन्दी अनुवाद: विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) ने जलवायु स्वास्थ्य जोखिमों से निपटने के लिए 'ग्लोबल वेक्टर-जनित रोग जीनोमिक पूर्व चेतावनी ग्रिड 4.0' की शुरुआत की।
बढ़ते वैश्विक तापमान और अप्रत्याशित वर्षा चक्रों के कारण तेजी से फैलने वाले संक्रामक रोगों (जैसे डेंगू, मलेरिया और जीका) के म्यूटेशन की रीयल-टाइम निगरानी के लिए डब्ल्यूएचओ ने उन्नत डिजिटल प्लेटफॉर्म का विस्तार किया है। यह नेटवर्क प्रभावित क्षेत्रों में स्वास्थ्य एजेंसियों को समय रहते चेतावनी जारी करेगा।

BIHAR NEWS

English Headline: Bihar Department of Industries Approves Special Financial Incentive Package for Mega Agro-Logistics and Solar Cold-Chain Hubs.
हिन्दी अनुवाद: बिहार उद्योग विभाग ने मेगा कृषि-लॉजिस्टिक्स और सौर शीतगृह हब के लिए विशेष वित्तीय प्रोत्साहन पैकेज को मंजूरी दी।
राज्य में कृषि उत्पादों के नुकसान को रोकने और मूल्य संवर्धन (Value Addition) को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बिहार सरकार ने नई सब्सिडी योजना अधिसूचित की है। इसके तहत मखाना, लीची, कतरनी चावल और मक्का के आधुनिक प्रसंस्करण केंद्रों तथा ग्रामीण स्तर पर सौर-ऊर्जा संचालित कोल्ड स्टोरेज स्थापित करने वाले उद्यमियों को पूंजीगत सहायता दी जाएगी।

English Headline: Bihar Forest Department Initiates High-Resolution Geospatial Mapping of Wetland Ecosystems in Gandak-Valmiki Eco-Belt.
हिन्दी अनुवाद: बिहार वन विभाग ने गंडक-वाल्मीकि इको-बेल्ट में आर्द्रभूमि पारिस्थितिकी तंत्र की उच्च-सटीक भू-स्थानिक मैपिंग शुरू की।
उत्तर-पश्चिमी बिहार की समृद्ध आर्द्रभूमियों (Wetlands) और पारंपरिक जल संचयन क्षेत्रों के संरक्षण के लिए वन विभाग ने सैटेलाइट और ड्रोन-आधारित सर्वेक्षण अभियान शुरू किया है। इसका मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक आर्द्रभूमियों का अतिक्रमण रोकना, जलीय जैव विविधता की रक्षा करना और क्षेत्र में भूजल पुनर्भरण को सुदृढ़ बनाना है।

SPORTS NEWS

English Headline: Indian Archery Contingent Clinches Double Gold in Compound Mixed Team and Individual Events at World Archery Cup Stage.
हिन्दी अनुवाद: भारतीय तीरंदाजी दल ने विश्व तीरंदाजी कप चरण में कंपाउंड मिश्रित टीम और व्यक्तिगत स्पर्धाओं में दोहरा स्वर्ण पदक जीता।
अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय तीरंदाजों ने अपना शानदार प्रदर्शन जारी रखते हुए कड़े फाइनल मुकाबलों में सटीक निशानेबाजी के दम पर शीर्ष स्थान हासिल किया। इस दोहरी जीत के साथ भारत ने टूर्नामेंट की समग्र पदक तालिका में अपना पहला स्थान बरकरार रखा है।

English Headline: International Hockey Federation (FIH) Mandates AI-Powered Smart Turf Sensors for Real-Time Ball Tracking in Global Events.
हिन्दी अनुवाद: अंतर्राष्ट्रीय हॉकी महासंघ (FIH) ने वैश्विक प्रतियोगिताओं में रियल-टाइम बॉल ट्रैकिंग के लिए एआई-संचालित स्मार्ट टर्फ सेंसर अनिवार्य किए।
अंतरराष्ट्रीय हॉकी मैचों में अंपायरिंग निर्णयों को अधिक पारदर्शी और सटीक बनाने के उद्देश्य से एफआईएच ने तकनीकी नियमों को अद्यतन किया है। इसके तहत गोल-लाइन और पेनल्टी कॉर्नर के दौरान गेंद के सूक्ष्म विचलन और फुट-फॉल्ट का त्वरित विश्लेषण करने के लिए मैदान की सतह पर उन्नत एआई सेंसर लगाए जाएंगे।

संकलन:-
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर,
बगहा-2, प. चम्पारण।

✍️ संदेश:

"खबरें केवल वर्तमान का दर्पण नहीं होतीं, बल्कि वे भविष्य के अवसरों और चुनौतियों को समझने की दृष्टि प्रदान करती हैं। निरंतर पढ़ते रहें और जागरूक रहें।"

अनुभाग-6

प्रेरक प्रसंग

बारी सबकी आती है

एक घने जंगल के किनारे एक छोटी-सी गौरैया रहती थी। उसके पंख भले ही छोटे थे, लेकिन उसे अपने उड़ने पर बहुत घमंड था। वह अक्सर पेड़ों की डालियों पर बैठकर दूसरे पक्षियों को अपनी उड़ान का किस्सा सुनाती और जंगल में रेंगने वाली चींटियों को देखकर हँसती।

एक दिन उसने चींटियों से कहा,

"तुम्हारी भी कोई जिंदगी है? न पंख, न तेज़ चाल! बस जमीन पर रेंगती रहती हो। मुझे देखो, मैं आसमान तक उड़ सकती हूँ।"

चींटियाँ चुप रहीं। उन्हें मालूम था कि प्रकृति किसी को व्यर्थ नहीं बनाती।

कुछ दिनों बाद गर्मी बहुत बढ़ गई। दोपहर की तेज धूप में गौरैया भोजन और पानी की तलाश में दूर तक उड़ती रही। थकान इतनी बढ़ी कि लौटते समय उसके पंख जवाब देने लगे। वह एक पेड़ के नीचे पहुँची, लेकिन संभल नहीं सकी और जमीन पर गिर पड़ी।

कुछ देर बाद उसकी साँसें थम गईं।

उसी रास्ते से चींटियों की एक कतार गुजर रही थी। उन्होंने गौरैया को देखा और उसके आसपास इकट्ठा हो गईं। वही चींटियाँ, जिनका गौरैया कभी मज़ाक उड़ाया करती थी, अब प्रकृति के नियम के अनुसार उसके अवशेषों को अपने ठिकाने की ओर ले जाने लगीं।

पास बैठे पक्षी यह दृश्य देखकर स्तब्ध थे। एक मैना धीरे से बोली,

"जिसे अपने पंखों पर इतना घमंड था, आज वही इन छोटी-सी चींटियों के सामने भी असहाय है।"

दूसरे पक्षी ने कहा,

"शायद प्रकृति हमें बता रही है कि किसी की ताकत हमेशा नहीं रहती और किसी की कमजोरी भी हमेशा नहीं रहती।"

उस दिन जंगल के पक्षियों ने एक महत्वपूर्ण सीख ली—किसी को उसके आकार, शक्ति या वर्तमान परिस्थिति से छोटा नहीं समझना चाहिए।

जीवन में परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। आज जो आगे है, वह कल पीछे हो सकता है; और जिसे हम कमजोर समझते हैं, वही किसी दिन हमारी ताकत बन सकता है।

सीख: किसी को छोटा समझकर उसका अपमान मत करो। समय किसी एक का नहीं होता—बारी सबकी आती है।

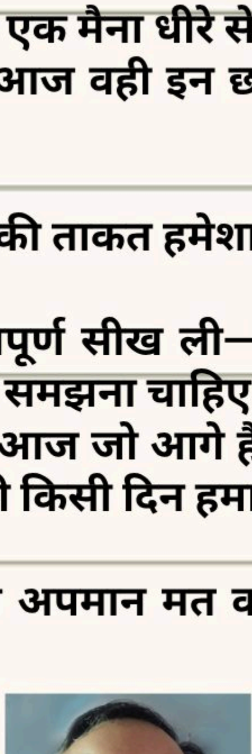

................✍️

मनोज कुमार

प्रधानाध्यापक

रा.म.वि.वाल्मीकिनगर

बगहा 2, प. चम्पारण।

अनुभाग-7

लोक नृत्य "झारी"

चम्पारण की खास लोक संगीत/नृत्य "झारी"

बिहार के तराई और चंपारण की सोंधी माटी में सावन की फुहारों के बीच जब हवाएं सरसराती हैं, तो वहां की चौपालों और सड़कों पर गूंजने वाली छड़ियों की 'खट-खट' की ताल सिर्फ एक आवाज़ नहीं, बल्कि सदियों पुरानी सांस्कृतिक जीवंतता की धड़कन है। गुजरात के डांडिया या देश के अन्य हिस्सों के पारंपरिक लाठी नृत्यों के समकक्ष खड़ी यह स्वदेशी लोककला "झारी" कहलाती है, जो मुख्य रूप से श्रावण मास, नागपंचमी और कजरी के उल्लासभरे दिनों में अपनी पूरी ऊर्जा के साथ प्रकट होती है। यह नृत्य और गीत का एक ऐसा अनूठा संगम है जिसमें ग्रामीण समाज की सादगी, खेतों की महक और सामूहिक आनंद का असीम विस्तार समाहित है।

झारी की जड़ें चंपारण के कृषि समाज और श्रम-संस्कृति के बहुत गहरे में उतरी हुई हैं। ऐतिहासिक रूप से, धान की कठिन रोपनी के थकान भरे दिनों के बाद जब सावन की रिमझिम फुहारें वातावरण को सुहाना बनाती थीं, तब ग्रामीण युवा और किसान शाम ढलते ही चौपालों पर एकत्र होते थे। यह नृत्य उनके लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि शारीरिक स्फूर्ति और मानसिक उल्लास का माध्यम था। इसमें जाति, वर्ग और उम्र के बंधन स्वतः टूट जाते थे और पूरा गांव एक गोल घेरे में आकर हाथ में मजबूत बांस की छड़ियां थाम लेता था। मौखिक परंपराओं के जरिए पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती यह लोक शैली भगवान शिव की बारात, कृष्ण-लीला, प्रकृति के सौंदर्य और लोक-नायकों के आख्यानों को अपने गीतों के जरिए जीवंत रखती आई है।

झारी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसकी पहचान केवल किसी एक समुदाय की सांस्कृतिक सीमा में बंद नहीं रही। उपलब्ध लोक-साहित्य संबंधी दस्तावेजों में पूर्वांचल की ऐसी परंपराओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें हिन्दू समुदाय के लोग मुहर्रम के अवसर पर भी झारी गाते, ताजिया बनाते अथवा उसमें सहभागी होते रहे हैं। लोकरंग की सामग्री में इस साझा परंपरा का प्रत्यक्ष उल्लेख मिलता है और यह भी बताया गया है कि मुहर्रम में झारी लकड़ी के डंडों को बजाकर गाई जाती है। मुहर्रम की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्मृति, विशेषकर हसन और हुसैन की कथा, संघर्ष और शहादत, लोकभाषा और लोकधुन के माध्यम से सामान्य ग्रामीण समाज तक पहुँचती है। कई जगह झारी गीतों में हसन-हुसैन को योगी के रूप में प्रस्तुत करने वाले लोकगीत का भी उल्लेख मिलता है।

इस लोक शैली की सबसे बड़ी खूबी इसका आंतरिक संगीत और अद्वितीय रिदम है। झारी में किसी बड़े, भारी या कृत्रिम वाद्य यंत्र की अनिवार्यता नहीं होती; कलाकारों के हाथों में लहराती छड़ियों का आपसी टकराव ही वह प्राकृतिक ताल पैदा करता है जो रोंगटे खड़े कर देने वाली ऊर्जा भर देता है। इसमें 'अगुआ' (मुख्य गायक) द्वारा उठाई गई लोकगीत की एक पंक्ति को घेरे में घूम रहे बाकी साथी 'पछुवा' (कोरस) के रूप में एक निश्चित ताल और तीव्र गति से दोहराते हैं। नृत्य की शुरुआत जहां एक धीमी, अनुशासित और संयत लय से होती है, वहीं जैसे-जैसे रात गहरी होती है, इसका टेम्पो (गति) इतना द्रुत और मत्त करने वाला हो जाता है कि दर्शक और कलाकार दोनों लोक-लय की एक अलग ही दुनिया में पहुंच जाते हैं।

विडंबना यह है कि आधुनिकता की अंधी दौड़, मनोरंजन के नए साधनों और पारंपरिक मेलों व चौपालों के सिमटते दायरे ने चंपारण की इस अनमोल थाती को आज विलुप्ति के मुहाने पर ला खड़ा किया है। राज्य के सांस्कृतिक मानचित्र पर इसे वह आधिकारिक पहचान और आदर नहीं मिल पाया जिसकी यह हकदार थी। इसके पारंपरिक गीतों, धुनों और नृत्यों के चरणों का कोई ठोस डिजिटल या लिखित दस्तावेजीकरण न होने के कारण यह कला अब चंपारण के कुछ सुदूर गांवों के बुजुर्गों की स्मृतियों तक सिमट कर रह गई है। यदि समय रहते इसे संरक्षित नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियां इस समृद्ध विरासत को केवल किंवदंतियों के रूप में ही जान पाएंगी।

बिहार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, स्थानीय प्रशासन, विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और सांस्कृतिक संगठनों के सहयोग से यदि ऐसे प्रयास किए जाएँ तो झारी जैसी लोकपरंपराएँ केवल संग्रहालय की वस्तु बनने से बच सकती हैं। युवा पीढ़ी इन्हें डिजिटल माध्यम, लोक-मंच, वृत्तचित्र और शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से नए दर्शकों तक पहुँचा सकती है।

इस अनमोल लोक-विरासत को बचाने के लिए अब केवल चिंता व्यक्त करने का नहीं, बल्कि युद्धस्तर पर सार्थक पहल करने का समय है। बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग को चाहिए कि वे राजकीय महोत्सवों, लोक-उत्सवों और पर्यटन सर्किट में झारी के पारंपरिक दलों को मंच और प्रोत्साहन प्रदान करें, ताकि कलाकारों को आर्थिक संबल भी मिल सके।

साथ ही, आज की Gen Z और युवा पीढ़ी से यह गंभीर आह्वान है कि वे अपनी जड़ों से कटने के बजाय इस स्वदेशी ताल को अपनी आधुनिक सांस्कृतिक पहलों, डिजिटल रील्स और फ्यूजन संगीत का हिस्सा बनाएं। जब तक युवा अपनी मिट्टी की इस अनूठी लय पर गर्व करना नहीं सीखेंगे, तब तक हमारी लोक-पहचान अधूरी रहेगी। झारी को बचाना केवल एक विलुप्त होती कला को पुनर्जीवित करना नहीं है, बल्कि अपनी उस सामूहिक सांस्कृतिक आत्मा को बचाना है जो हमें हमारी पहचान से जोड़ती है।

.................✍️
शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर
बगहा-2, प. चम्पारण।

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

"पाठक पृष्ठ"

दैनिक भास्कर बेतिया भास्कर 06-04-2026

मंडे पॉजिटिव सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की टीम चंपारण ज्ञानाग्रह से मौन किंतु प्रभावी शैक्षिक क्रांति की बन रही साक्षी

चंपारण-ज्ञानाग्रह : बिहार के शैक्षिक पुनर्जागरण का आधुनिक शंखनाद, सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित हो रही

मणिकांत मिश्र|बेतिया

बिहार की ऐतिहासिक धरती, जो कभी नालंदा और विक्रमशिला के ज्ञानलोक से संपूर्ण विश्व को आलोकित करती थी, आज पुनः एक मौन किंतु अत्यंत प्रभावी शैक्षिक क्रांति की साक्षी बन रही है। इस वैचारिक क्रांति का ध्वजवाहक है चम्पारण-ज्ञानाग्रह। यह केवल एक दैनिक बुलेटिन या पीडीएफ श्रृंखला नहीं है, बल्कि टीचर्स ऑफ बिहार के समर्पित शिल्पकारों द्वारा गढ़ा गया एक ऐसा बौद्धिक अनुष्ठान है, जो राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के सरकारी विद्यालयों में ज्ञान की गंगा प्रवाहित कर रहा है। चम्पारण सत्याग्रह की पावन स्मृतियों से ऊर्जस्वित यह पत्रिका आज बिहार के हजारों विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं का प्राण बन चुकी है। इस महती परियोजना के केंद्र में जिले के बगहा दो प्रखंड क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालय बोदसर के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार का तपस्वी व्यक्तित्व है। उनके प्रधान संपादकीय और संकलन कौशल

निष्कर्ष : दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर एक अमिट हस्ताक्षर बन चुका है

टीचर्स ऑफ बिहार- द चेंज मेकर्स के बैनर तले प्रकाशित यह पत्रिका यह सिद्ध करती है कि बिना किसी व्यावसायिक स्वार्थ या सरकारी वित्त पोषण के भी यदि संकल्प शक्ति दृढ़ हो, तो शिक्षा के क्षेत्र में युगांतरकारी परिवर्तन लाया जा सकता है। यह दैनिक ज्ञानकोश बिहार के शैक्षिक परिदृश्य पर अमिट हस्ताक्षर बन चुका है। चम्पारण-ज्ञानाग्रह केवल शब्दों का संकलन नहीं है; यह शैलेन्द्र कुमार व टीम के उस अटूट विश्वास का प्रतिबिंब है कि शिक्षक बदलेंगे, तो

शिक्षक संवर्धन खंड केवल सूचनात्मक लेखों का संग्रह नहीं, यह शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल व शिक्षण पद्धतियों के नवाचार का एक विमर्श मंच है। मनोज कुमार झा के लेखों में मनोविज्ञान, विद्यालय प्रबंधन व शैक्षिक चुनौतियों का जो विश्लेषण मिलता है। वह शिक्षकों को पारंपरिक ढर्रे से निकालकर आधुनिक शिक्षण की ओर प्रेरित करता है। यह खंड शिक्षकों को यह अहसास कराता है कि वे केवल कर्मचारी नहीं,बल्कि समाज के चेंज मेकर्स हैं। जब एक शिक्षक इस पत्रिका के माध्यम से नई शिक्षण विधियों,बाल मनोविज्ञान और नेतृत्व कौशल से लैस होता है,तो उसका सीधा लाभ कक्षा के अंतिम

हिन्दुस्तान

सामान्य बुद्धि के साथ सिलेबस ज्ञान बढ़ा रहा 'चंपारण ज्ञानाग्रह'

हि विशेष

■ चन्द्रभूषण शांडिल्य

बगहा। सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को कम समय से अधिक से अधिक जानकारी देने को नित नवाचार होते रहते हैं। ऐसा ही एक नवाचार बगहा के एक विद्यालय से शुरु हुआ जो आज करीब-करीब एक हजार विद्यालयों में फॉलो किया जा रहा है। रोज प्रार्थना की घंटी बजने के बाद इसका वाचन होता है और बच्चों को नयी जानकारी मिलती है। हम बात कर रहे हैं 'चंपारण ज्ञानाग्रह' की। जिले के बगहा दो प्रखंड के मंगलपुर अवसानी पंचायत के राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय औसानी से रोज सुबह चंपारण ज्ञानाग्रह तैयार कर विभिन्न विद्यालयों के ग्रुपों में भेजा जाता है, जिसका उपयोग रोज किया जाता है। एनसीईआरटी की पुस्तकों से तैयार की गई प्रश्नोत्तरी का यह ज्ञानाग्रह बच्चों के सामान्य बुद्धि के साथ ही सिलेबस ज्ञान को भी बढ़ा रहा है। चंपारण ज्ञानाग्रह को बनाने वाले राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार ने बताया कि गर्मियों की छुट्टी के दौरान सोचा कि आखिरकार बच्चों से कैसे कनेक्ट रहा जाए तथा पढ़ाई के प्रति उनमें रुचि कैसे जमायी जाए। काफी विचार विमर्श के बाद प्रश्नों की श्रृंखला तैयार की, जिसका नाम रखा चंपारण ज्ञानाग्रह। इसको कुछ शिक्षा वाले ग्रुपों में शेयर किया रिस्पॉन्स अच्छा मिला। विद्यालय खुलने के बाद कई विद्यालयों में चेतना सत्र के दौरान उसका वाचन शुरू किया गया। आज हजार के करीब विद्यालय ऐसे हैं जो इसका उपयोग प्रार्थना सभा में करते हैं। अब तक इसके 108 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इसको एक बेहतर प्लेटफार्म उपलब्ध कराने में टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप ने दिया।

- चेतना सत्र के दौरान होता है इस प्रार्थना सभा सामग्री का
- गर्मियो की छुट्टी के दौरान शुरु हुआ चंपारण ज्ञानाग्रह, मिला टीचर्स ऑफ बिहार ग्रुप का साथ

01 सौ आठ अंक का हो चुका प्रकाशन

सामान्य विज्ञान से ज्ञान तक के प्रश्न होते हैं समाहित

चंपारण ज्ञानाग्रह के 108वें अंक मे प्रश्न है, प्रकाश का प्रकीर्णन किसके कारण होता है। रक्त मे यूरिया का उत्सर्जन कहा से होता है, तत्वो का वर्गीकरण किसने किया। विद्युत परिपथ मे स्वीच का कार्य, पर्यावरण मे प्राथमिक उत्पादक, मानव मे पाचन एंजाइम का उदाहरण, बीरंगी के लेखक कौन है। इसके अतिरिक्त शब्द संगम, मुख्य समाचार, विदेशी समाचार, बिहार की खबर, खेल की समाचार और अंत मे प्रेरक प्रसंग शामिल है।

4 दैनिक जागरण मुजफ्फरपुर,08 मई, 2026 बगहा जागरण

'चंपारण-ज्ञानाग्रह' शिक्षकों के प्रयास से हर गांव तक पहुंची शिक्षा की नई अलख

संवाद सूत्र, जागरण• बगहा: बिहार की ऐतिहासिक ज्ञान परंपरा को नई ऊर्जा देते हुए बगहा अनुमंडल से एक सराहनीय शैक्षिक पहल सामने आई है। 'चंपारण-ज्ञानाग्रह' नामक दैनिक शैक्षिक पत्रिका आज सरकारी विद्यालयों में शिक्षा के स्वरूप को बदलने का कार्य कर रही है। बिना किसी बड़े बजट या सरकारी योजना के, शिक्षकों के सामूहिक संकल्प और समर्पण से यह पहल हजारों बच्चों के बौद्धिक और नैतिक विकास का माध्यम बन चुकी है। चम्पारण की ऐतिहासिक धरती से शुरू हुआ यह प्रयास अब एक शैक्षिक आंदोलन का रूप ले चुका है। विद्यालयों की प्रार्थना सभाओं में इस पत्रिका का उपयोग

- यह पत्रिका सरकारी विद्यालयों में बदल रही शिक्षा का स्वरूप
- शिक्षकों के सामूहिक प्रयास से तैयार हुई यह दैनिक पत्रिका

भाषा कौशल, समसामयिक घटनाओं और जीवन मूल्यों की जानकारी दी जा रही है। इससे शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित न रहकर व्यावहारिक और जीवनोपयोगी बन रही है। दूरदर्शी नेतृत्व में आकार ले रही इस पहल का नेतृत्व राजकीय प्राथमिक विद्यालय बोदसर बगहा दो के प्रधान शिक्षक शैलेन्द्र कुमार कर रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में शिक्षकों की एक टीम पिन्टू कुमार, सौरभ कुमार,

प्रखंड संसाधन केंद्र बगहा दो • जागरण

राव, मनोज कुमार और मनोज कुमार झा प्रतिदिन पत्रिका का संपादन और प्रकाशन कर रही है। टीम द्वारा तैयार सामग्री विद्यार्थियों के स्तर के अनुरूप सरल, रोचक और प्रभावी होती है।

सप्तऋषि माडल से सर्वांगीण संरचना बहुआयामी है, जिसे 'सप्तऋषि माडल' के रूप में विकसित किया गया है। इसमें प्रार्थना सभा, सामान्य ज्ञान, भाषा विकास, 'आज का अखबार' और प्रेरक प्रसंग जैसे खंड शामिल हैं। यह माडल विद्यार्थियों के मानसिक, संतुलित रूप से आगे बढ़ाता है।

> सरकारी विद्यालयों मे इस प्रकार की नवाचारी पहल बच्चों के शैक्षिक वातावरण को समृद्ध करती है। चंपारण-ज्ञानाग्रह विद्यार्थियों के ज्ञान, अनुशासन और व्यक्तित्व विकास मे सकारात्मक भूमिका निभा रही है। यह अन्य विद्यालयों के लिए भी प्रेरणास्रोत है।
>
> फूदन राम, बीईओ, बगहा दो

शिक्षक संवर्धन पर विशेष जोर: पत्रिका का 'शिक्षक संवर्धन' खंड शिक्षकों के निरंतर विकास पर केंद्रित है। इसमें आधुनिक शिक्षण विधियां, कक्षा प्रबंधन और बाल मनोविज्ञान जैसे विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते हैं, जिससे शिक्षक भी स्वयं को अपडेट रखते

कैरियर मार्गदर्शन और जागरूकता: ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए पत्रिका में कैरियर मार्गदर्शन से जुड़े विषयों को भी शामिल किया गया है। इसके साथ ही स्वास्थ्य, आपदा प्रबंधन और सामाजिक सुरक्षा जैसे मुद्दों पर भी जागरूकता फैलायी जा रही है।

शिक्षा से बदलाव की दिशा: 'टीचर्स आफ बिहार—द चेंज मेकर्स' के बैनर तले संचालित यह पहल यह साबित कर रही है कि सीमित संसाधनों में भी बड़ा बदलाव संभव है। 'चम्पारण-ज्ञानाग्रह' अब केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि शिक्षा के माध्यम से समाज परिवर्तन का सशक्त

"बिहार दर्शन : औरंगाबाद, अंक–1"

'संपादकीय'✍️

शीर्षक: औरंगाबाद: सोन-पुनपुन का दोआब, विंध्य की पहाड़ियाँ और ऊर्जा गलियारा

भौगोलिक, प्रशासनिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से औरंगाबाद मगध प्रमंडल का सबसे दक्षिणी-पश्चिमी और ऊर्जा-समृद्ध ज़िला है। वर्ष 1973 में गया ज़िले से अलग होकर स्वतंत्र अस्तित्व में आया यह ज़िला दक्षिण बिहार के औद्योगिक और व्यापारिक नक्शे पर शीर्ष स्थान रखता है। इसकी भौगोलिक सीमाएं उत्तर में अरवल, पूर्व में गया, दक्षिण में झारखंड के पलामू व चतरा तथा पश्चिम में सोन नदी के पार रोहतास ज़िले को स्पर्श करती हैं। ऐतिहासिक ग्रैंड ट्रंक रोड (NH-19) और पूर्व मध्य रेलवे के व्यस्त ग्रैंड कॉर्ड रेलखंड पर स्थित होने के कारण यह उत्तर और पूर्वी भारत के बीच एक अनिवार्य राष्ट्रीय परिवहन गलियारा है।

इस ज़िले के संपूर्ण भूगोल की सबसे बड़ी विशेषता सोन (Son), पुनपुन (Punpun), बटने, अदरी और मदार जैसी नदियों का जल प्रवाह तंत्र है। सोन नदी ज़िले की पूरी पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है, जबकि पुनपुन नदी इसके मध्य और पूर्वी भागों को सींचती है। भू-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से औरंगाबाद का भूगोल दो भागों में विभाजित है— उत्तरी एवं मध्य भाग, जो सोन नहर प्रणाली से सिंचित उपजाऊ जलोढ़ मैदान है, तथा दक्षिणी भाग (मदनपुर, देव और कुटुंबा प्रखंड), जो छोटानागपुर और विंध्य पर्वतमाला की प्राचीन ग्रेनाइट व नीस चट्टानों से युक्त पठारी व कटीली पहाड़ियों से घिरा है।

यहाँ की 'उमगा पहाड़ी' (Umga Hill) और 'पवई पहाड़ियाँ' भू-वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत प्राचीन संरचनाएँ हैं, जो स्थानीय जल-पुनर्भरण और समृद्ध जैव-विविधता का आधार हैं। ज़िले की मिट्टी मुख्य रूप से 'बलसुंदरी', 'केवाल' और दक्षिणी अंचलों में 'लाल-दोमट' का मिश्रण है। सोन नहरों के सघन जाल के कारण ज़िले का मैदानी भू-भाग पूरे बिहार में उच्च कृषि उत्पादकता वाले क्षेत्रों में गिना जाता है, जहाँ मुख्य रूप से धान, गेहूं और दलहन की खेती होती है।

यहाँ की जलवायु उप-उष्णकटिबंधीय शुष्क मानसूनी है। पठारी निकटता के कारण गर्मियों में औरंगाबाद राज्य के सबसे गर्म ज़िलों में शामिल रहता है, जबकि सर्दियों में कड़ाके की ठंड पड़ती है। इस विशिष्ट भूगोल और प्रचुर जल-संसाधनों का सीधा प्रभाव यहाँ की औद्योगिक पहचान पर पड़ा है; नबीनगर में स्थापित विशाल एनटीपीसी सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट सोन नदी के जल और झारखंड के कोयला बेल्ट की निकटता का प्रत्यक्ष लाभ उठाकर संपूर्ण बिहार को निर्बाध बिजली प्रदान करता है।

सोन के विस्तृत कछारों, उमगा की प्राचीन पहाड़ियों और जीटी रोड के इस सामरिक गलियारे का यह प्रामाणिक भौगोलिक विश्लेषण मगध के इस दक्षिणी सीमांत की औद्योगिक और कृषि क्षमता को समझने के लिए एक स्पष्ट और वैज्ञानिक दृष्टि प्रदान करता है।

...........✍️

शैलेन्द्र कुमार
प्रधान शिक्षक
रा.प्रा.वि. बोदसर, बगहा-2

Reg. No. BR/2025/0487469

"चम्पारण-ज्ञानाग्रह"

आइए, हम मिलकर छात्रों के ज्ञान, प्रेरणा और जिज्ञासा को नयी दिशा दें। 🌿🙏

Thank You..

बच्चों के हितार्थ अपना बहुमूल्य समय देने के लिए।

संपादक:-

शैलेन्द्र कुमार

'प्रधान शिक्षक'

Govt. PS बोदसर, बगहा-2, प. चम्पारण।

(10010803702)

📱-9939671700

अगर आपके मन में कोई नया विचार, कोई इवेंट, कोई एक्टिविटी या किसी बदलाव की पहल है, तो कृपया टीम में बताइए।

+917250818080

teachersofbihar@gmail.com

+917250818080

www.teachersofbihar.org